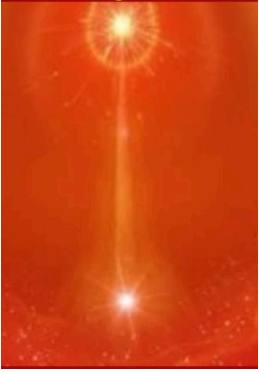
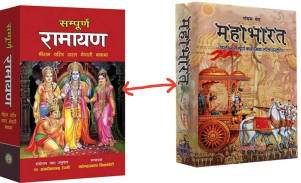


20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे योगबल से विकारों रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर सच्चा-सच्चा दशहरा मनाओ"



प्रश्न:- रामायण और महाभारत का आपस में क्या कनेक्शन है? दशहरा किस बात को सिद्ध करता है?



रामायण

उत्तर:- दशहरा होना माना रावण खत्म होना और सीताओं को छुटकारा मिलना। लेकिन दशहरा मनाने से तो रावण से छुटकारा मिलता नहीं। जब महाभारत होता है तब सब सीताओं को छुटकारा मिल जाता है। महाभारत लड़ाई से रावणराज्य खत्म होता है तो रामायण, महाभारत और गीता का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है।



वन्दना की भुक्ति

गीतःमहफिल में जल उठी शमा...

[Click](#)



(महफिल में जल उठी शमा, परवाने के लिये प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये) -२

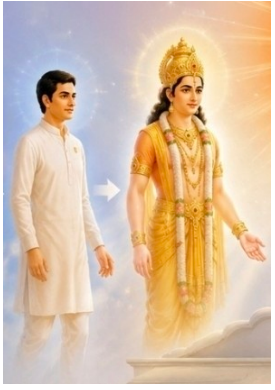
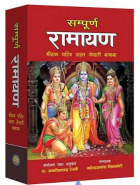
चारों तरफ़ लगाए फेरे, फिर भी हरदम दूर रहे
उलफ़त देखो आग बनी है, मिलने से मजबूर रहे
यही सज़ा हैं दुनिया में
यही सज़ा हैं दुनिया में, दीवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

मरने का है नाम मुहब्बत, जलने का है नाम जवानी
पत्थर दिल हैं सुनने वाले, कहने वाला आँख का पानी
आँसू आये आँखों में
आँसू आये आँखों में, गिर जाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

महफिल में जल उठी शमा, परवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



अभी गफलत में ना रहना, ये वाले मीठे बाबा ने 1969 से पहले कही थी

ओम् शान्ति। बाप फरमाते हैं कि तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय, तुमको अब दैवी सम्प्रदाय नहीं कह सकते। तुम अब हो ब्राह्मण सम्प्रदाय, पीछे दैवी सम्प्रदाय बनने वाले हो। यह जो रामायण है, आज (दशहरे पर) जैसे इनका रामायण पूरा होने वाला है परन्तु पूरा होता नहीं। अगर रावण मरता है तो रामायण की कथा पूरी होनी चाहिए, परन्तु होती नहीं है। छुटकारा होता है महाभारत से। अब यह भी समझने की बातें हैं। रामायण क्या है और महाभारत क्या है? दुनिया तो इन बातों को जानती नहीं। रामायण और महाभारत दोनों का कनेक्शन है। महाभारत लड़ाई से रावण राज्य खत्म होता है। फिर यह दशहरा आदि मनाने का ही नहीं है। गीता अथवा महाभारत भी है रावण राज्य को खत्म करने वाले। अभी तो टाइम है, तैयारी भी हो रही है - वह है हिंसक, तुम्हारी है अहिंसक। तुम्हारी है गीता, तुम गीता का ज्ञान सुनते हो। उससे क्या होने का है? रावणराज्य खलास होने का है। वह भल रावण को मारते हैं परन्तु रामराज्य तो होता नहीं। अब रामायण और महाभारत है ना। तो महाभारत है रावण को खलास करने के लिए। यह बड़ी गुह्य समझने की



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बातें हैं इसमें विशाल बुद्धि चाहिए। बाप समझाते हैं

महाभारत लड़ाई से रावणराज्य खत्म होता है। ऐसे

नहीं कि सिर्फ रावण को मारने से रावण राज्य खत्म

हो जाता है। उसके लिए तो संगम चाहिए। अब

संगम है। अब तुम तैयारी कर रहे हो, रावण पर

विजय पाने की। इसमें ज्ञान के अस्त्र शस्त्र चाहिए।

वह नहीं। जैसे दिखाते हैं रावण और राम की युद्ध

हुई। यह शास्त्र सब है भक्ति मार्ग के। अभी तुम

रावण राज्य पर विजय पाते हो योगबल से। यह हो

गई गुप्त बात। 5 विकारों रूपी रावण पर तुम्हारी

विजय होती है। किससे ? गीता से। बाबा तुमको

गीता सुना रहे हैं। भागवत तो है नहीं। भागवत में

दिखाते हैं कृष्ण चरित्र। कृष्ण के चरित्र तो कुछ हैं

नहीं। तुम जानते हो जब विनाश होगा, महाभारी

लड़ाई लगेगी, उनसे ही रावणराज्य खत्म हो जायेगा।

सीढ़ी में भी दिखाया गया है। जब से रावण राज्य

शुरू हुआ है तब से भक्ति मार्ग हुआ है। यह तुम ही

जानते हो। गीता का कनेक्शन महाभारत लड़ाई से

है। तुम गीता सुनकर राज्य पाते हो और लड़ाई

लगती है सफाई के लिए। बाकी भागवत में चरित्र

आदि फालतू हैं। शिव पुराण में कुछ भी नहीं है। नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तो गीता का नाम होना चाहिए शिव पुराण।

शिवबाबा बैठ ज्ञान देते हैं - सबसे ऊंची है गीता।

गीता सब शास्त्रों से छोटी है और सब पुस्तक बहुत

बड़े बनाये हैं। मनुष्यों की जीवन कहानी भी बहुत

बड़ी-बड़ी बनाई है। नेहरू ने शरीर छोड़ा, उनके

कितने बड़े वाल्युम बनाते हैं। यह गीता शिवबाबा के

वाल्यूम्स की कितनी बड़ी होनी चाहिए। परन्तु गीता

कितनी छोटी है क्योंकि बाप सुनाते ही एक बात है

कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और चक्र

को समझो। बस, इसलिए गीता छोटी बना दी है। यह

ज्ञान है कण्ठ करने का। तुमको मालूम है गीता का

लॉकेट बनाते हैं। उसमें छोटे अक्षर होते हैं। अब

बाबा भी तुम्हारे गले में लॉकेट पहनाते हैं त्रिमूर्ति

और राजाई का। बाबा कहते हैं गीता है दो अक्षर

अल्फ और बे। यह है गुप्त मन्त्र का लॉकेट

मनमनाभव। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।

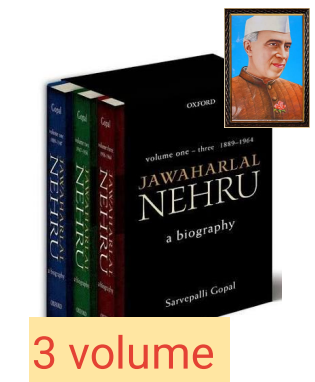
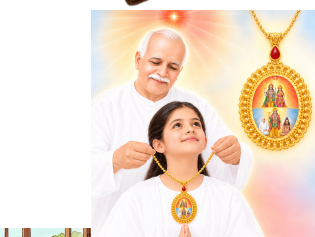
तुम्हारा काम है योगबल से विजय पाना फिर तुम्हारे

लिए सफाई भी चाहिए। बाप समझाते हैं कि तुम्हारे

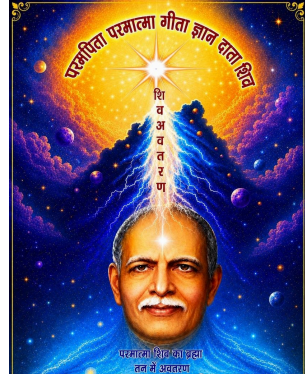
योगबल से ही रावणराज्य का विनाश होना है।

रावणराज्य कब शुरू हुआ है, यह भी जानते नहीं।

यह ज्ञान बड़ा सहज है। सेकेण्ड की बात है ना। 84



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

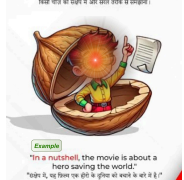
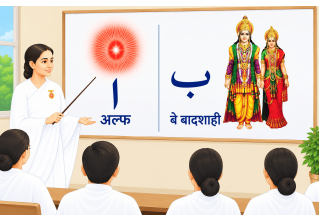
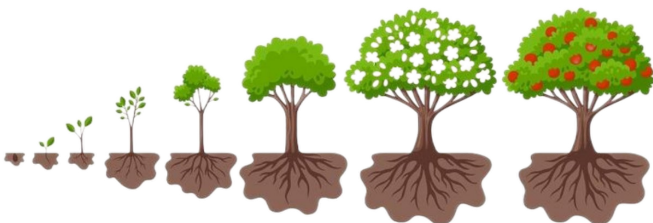
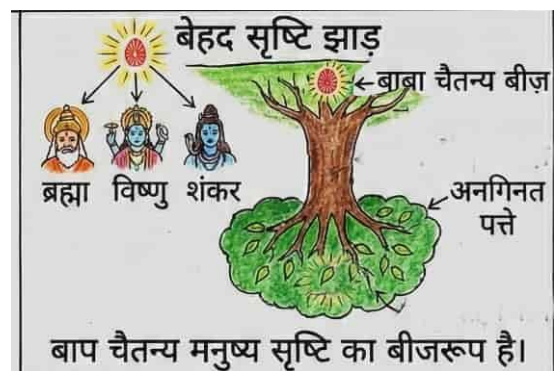


अखित-मिरि-सम स्यात् कज्जल सिन्धु-पात्रे,
सूर-तस्वर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश परं न याति।।

"हे शिव, यदि गीले पर्वत को समुद्र में मिला कर स्याही तैयार की जाए, देवताओं के उद्यान के वृक्ष की शाखाओं को लेखनी बनाया जाए और पृथ्वीको कागद बनाकर भगवती शारदा देवी अर्थात् सरस्वती देवी अनंतकाल तक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का संपूर्ण व्याख्यान संभव नहीं होगा।"

"In a Nutshell"

To explain something in a brief and simple way.



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
जन्मों की सीढ़ी में भी इतने इतने जन्म लिए हैं।
कितना सहज है। बाप है ज्ञान का सागर। ज्ञान
सुनाते ही आते हैं। तुम सब मुरली के कागज इकट्ठे
करो तो ढेर हो जाएं। बाप डिटेल में समझाते हैं।
नटशेल में तो कहते हते हैं- अल्फ को याद करो। बस
बाकी टाइम किसमें लगाते हैं? तुम्हारे सिर पर पापों
का बोझा बहुत है। है। वह याद से ही उतरना है,
इसमें मेहनत लगती है। घड़ी घड़ी तुम भूल जाते हो।
तुम बाबा को याद करते रहो तो कभी विघ्न नहीं
पड़ेंगे। Point to be Noted देह-अभिमानी बनने से विघ्न पड़ते हैं। देही-
Coming soon... अभिमानी बनते हो (अन्त में) फिर आधाकल्प कुछ
विघ्न नहीं पड़ता। यह कितनी गुह्य बातें हैं समझने
की। शुरू से लेकर कितना सुनाते आये हैं फिर भी
कहते हैं सिर्फ अल्फ बे को याद करो। बस । झाड़
का है विस्तार। बीज तो छोटे से छोटा होता है। झाड़
कितना बड़ा निकलता है।

आज दशहरा है ना। अब बाबा समझाते हैं रामायण
का महाभारत से क्या सम्बन्ध है। रामायण तो भक्ति

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मार्ग का है। आधाकल्प से चला आता है। गोया अब रावणराज्य चल रहा है। फिर महाभारत आयेगा तो रावण राज्य खत्म हो रामराज्य शुरू हो जायेगा।



रामायण और महाभारत में क्या फ़र्क है? रामराज्य की स्थापना और रावणराज्य का विनाश होने का है।



गीता सुनकर तुम विश्व का मालिक बनने लायक बनते हो। गीता और महाभारत भी है अभी के लिए।

रावणराज्य खत्म होने के लिए। बाकी उन्होंने जो लड़ाई दिखाई है वह रांग है। लड़ाई है 5 विकारों पर

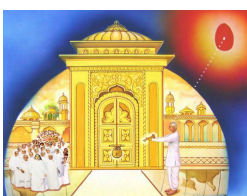


जीत पाने की। तुमको बाप गीता के दो अक्षर सुनाते हैं मनमनाभव-मध्याजी भव। गीता के शुरू में और

अध्याय:9; श्लोक 34
अध्याय:16; श्लोक 65

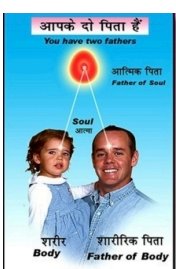
अन्त में यह दो अक्षर आते हैं। बच्चे समझते हैं - बरोबर गीता का एपीसोड चल रहा है। परन्तु

किसको कहेंगे तो कहेंगे कृष्ण कहाँ है? बाबा की समझानी और भक्ति मार्ग के शास्त्रों में कितना फर्क



है। यह कोई नहीं जानता कि यह रामायण क्या है?

महाभारत क्या है? महाभारत लड़ाई के बाद ही स्वर्ग के द्वार खुलते हैं। परन्तु मनुष्य यह समझेंगे नहीं,



इसलिए तुम परिचय ही बाप का दो। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। यह बाप सारी दुनिया के लिए

कहते हैं। एक गीता को ही खण्डन किया है। गीता



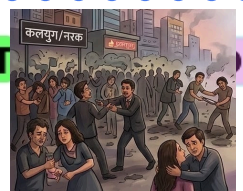
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



का सभी भाषाओं में प्रचार है। तुम्हारे राज्य में भाषा ही एक होगी। वहाँ कोई शास्त्र पुस्तक आदि नहीं होगा। वहाँ भक्ति मार्ग की कोई बात नहीं रहती। भारत का तैलुक है ही रामायण, महाभारत और गीता से। भगवान तो बच्चों को गीता सुनाते हैं, जिससे तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। महाभारत लड़ाई जरूर लगनी चाहिए, जो पतित दुनिया खत्म हो जाए। गीता से तुम पावन बनते हो। पतित-पावन भगवान आते ही अन्त में हैं। कहते हैं काम महाशत्रु है, इस पर विजय पानी है। काम विकार से कभी हार नहीं खानी है, इनसे बहुत नुकसान होता है। विकारों के पिछाड़ी बड़े-बड़े नामीग्रामी, मिनिस्टर्स आदि भी अपना नाम बदनाम करते हैं। काम के पिछाड़ी बहुत खराब होते हैं इसलिए बाप समझाते हैं बाबा के पास जवान-जवान बच्चे आते हैं। ऐसे बहुत हैं जो ब्रह्मचर्य में रहते हैं। सारी आयु शादी नहीं करते हैं। फीमेल्स भी होती हैं। नन्स कब विकार में नहीं जाती। परन्तु उससे कोई प्राप्ति है नहीं। यहाँ तो बात है पवित्र बन जन्म-जन्मान्तर स्वर्ग के मालिक बनने की। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है। वह जब कटे तब स्वर्ग में चलें। यहाँ मनुष्य पाप करते रहते

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हैं। करके एक जन्म कोई संन्यासी बनते हैं, जन्म तो विकार से लेते हैं। रावणराज्य में विकार बिगर जन्म

होता नहीं। पूछते हैं, वहाँ जन्म कैसे होगा? योगबल

किसको कहा जाता है? यह पूछने की दरकार नहीं

है। है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। रावण राज्य ही

नहीं तो प्रश्न उठ नहीं सकता। सब साक्षात्कार होंगे।

जब बूढ़े होते हैं तो यह साक्षात्कार होता है कि

जाकर बच्चा बनूँगा। माता के गर्भ में जाऊँगा। यह

नहीं मालूम रहता कि फलाने घर जाऊँगा। सिर्फ अब

छोटा बच्चा बनना है, मोर और डेल का मिसाल है।

आंखों के आंसू से गर्भ होता है। पपीते के झाड़ में

भी एक मेल, एक फीमेल का झाड़ होता है। एक दो

के बाजू में होने से फल देते हैं। यह भी वन्दर है। जब

जड़ चीजों में भी ऐसा है तो चैतन्य में सतयुग में क्या

नहीं हो सकता है। यह सब डिटेल आगे चलकर

समझ में आ जायेगा। मुख्य बात है तुम बाप को याद

कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन वर्सा तो ले लो।

फिर वहाँ की रसम जो होगी सो देखेंगे। तुम योगबल

से विश्व के मालिक बनते हो, तो बच्चा क्यों नहीं पैदा

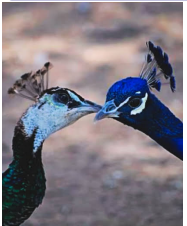
हो सकता। ऐसे-ऐसे प्रश्न बहुत पूछते हैं फिर कोई

बात में जवाब पूरा नहीं मिला तो गिर पड़ते। थोड़ी

Points: **ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.**

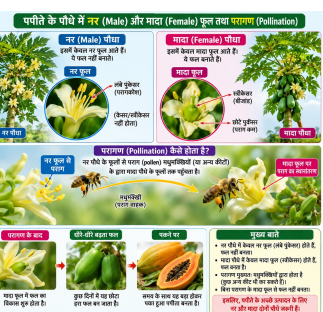


Point to be Noted



Point to ponder deeply...

to understand "योगबल के अभाव" भी एक मेल, एक फीमेल का झाड़ होता है। एक दो के बाजू में होने से फल देते हैं। यह भी वन्दर है। जब जड़ चीजों में भी ऐसा है तो चैतन्य में सतयुग में क्या नहीं हो सकता है। यह सब डिटेल आगे चलकर समझ में आ जायेगा। मुख्य बात है तुम बाप को याद कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन वर्सा तो ले लो। फिर वहाँ की रसम जो होगी सो देखेंगे। तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो, तो बच्चा क्यों नहीं पैदा हो सकता। ऐसे-ऐसे प्रश्न बहुत पूछते हैं फिर कोई बात में जवाब पूरा नहीं मिला तो गिर पड़ते। थोड़ी

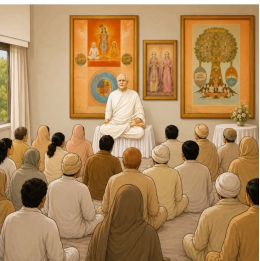
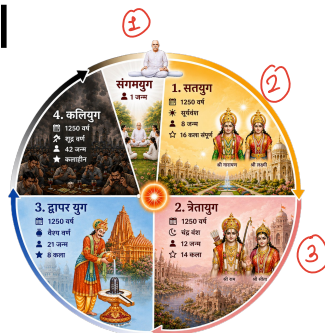


5.11.2023
जाता है। आयुश्चक्र भूत, पुनर्जन्म भूत। वहाँ धन आदि सब अकींचत रहता है। पहले से साक्षात्कार होता है कि बच्चा आने वाला है। वहाँ मुख का प्यार होता है। विकार की बात ही नहीं है। वह है ही निर्विकारी दुनिया। श्रीकृष्ण देवों - कितना फर्स्टक्लास मीठा है। अब ऐसा बनना है। तुमको तो पटरानी बनना है, मीरा तो सिर्फ भजन गाती थी उनको।
[More Exchange of saliva is enough]
But it will be in Action at it's proper Predial time; Because that World is Totally Governed by Law.



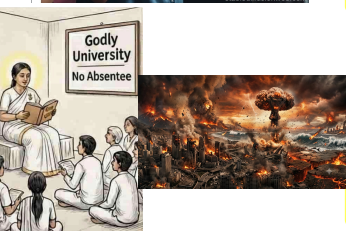
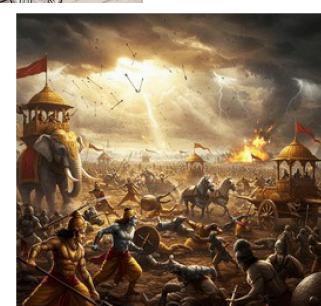
20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बात पर भी संशय आ जाता है। शास्त्रों में ऐसी कोई बातें हैं नहीं। शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। परमपिता परमात्मा आकर ¹ब्राह्मण धर्म, ²सूर्यवंशी ³चन्द्रवंशी धर्म की स्थापना करते हैं।

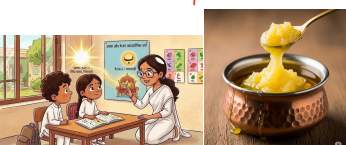


तुम ब्राह्मण हो संगमयुगी, बाबा को संगमयुग पर आना पड़ता है। पुकारते भी हैं हे पतित-पावन आओ। ^{foreign}उस तरफ वाले कहते हैं हे लिबरेटर, दुःख से लिबरेट करो। दुःख देते कौन हैं यह भी उन्हीं को मालूम नहीं। तुम जानते हो रावणराज्य खत्म होता है। तुमको बाबा राजयोग सिखलाते हैं। जब पढ़ाई पूरी होती है तब विनाश होता है, जिसका नाम महाभारत रखा है। महाभारत में रावण राज्य खत्म होता है। दशहरे में एक रावण को खत्म करते हैं। वह हैं हद की बातें। यह हैं बेहद की बातें। यह सारी दुनिया खत्म हो जायेगी। इतनी छोटी-छोटी बच्चियाँ

नॉलेज कितनी बड़ी ले रही हो। वह जिस्मानी नॉलेज जैसे घासलेट है, यह है सच्चा घी। तो रात-दिन का फर्क है ना। रावण राज्य में तुमको घासलेट खाना



v/s



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पड़ता है। आगे इतना सस्ता सच्चा घी मिलता था,

फिर महंगा हो गया तो घासलेट (तेल) खाना पड़ा।

यह गैस, बिजली आदि पहले कुछ भी नहीं था। थोड़े

ही वर्षों में कितना फ़र्क पड़ा है। अभी तुम जानते हो

सब खत्म होने वाला है। शिवबाबा हमें लक्ष्मी-

नारायण जैसा बनने के लिए पढ़ा रहे हैं। यह नशा

इस बाबा को तो बहुत रहता है। बच्चों को माया

भुला देती है। जब कहते हैं हम बाबा से वर्सा लेने

आये हैं तो वह नशा क्यों नहीं चढ़ता! स्वीट होम,

स्वीट राजधानी भूल जाती है। बाबा जानते हैं जो जो

हड्डी सर्विस करते हैं वही महा-राजकुमार बनेंगे।

तुमको यह नशा क्यों नहीं रहता है? क्योंकि याद में

नहीं रहते हैं। सर्विस में पूरा तत्पर नहीं रहते हैं। कभी

तो सर्विस में उछल पड़ते, कभी ठण्डे हो जाते। यह

हर एक अपने से पूछो - ऐसा होता है ना। कभी-

कभी भूलें भी हो जाती है, इसलिए बाबा समझाते

हैं। जबान बड़ी मीठी चाहिए, सबको राज़ी करना है।

किसको आवेश न आये। बाप कितना प्यार का

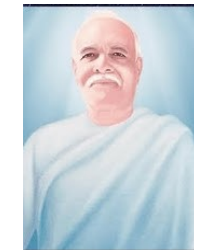
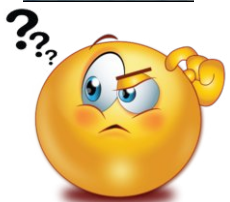
सागर है। अब गऊ कोस बन्द कराने के लिए कितना

माथा मारते हैं। बाबा कहते हैं सबसे बड़ा कोस है

काम कटारी चलाना। पहले तो वह बन्द करो। बाकी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

May I have your Attention Please..!



ये तो पक्का कर लो..

You can never reach to the peak without "श्री"।

ले सभी ऐसे सेवागारी हो ना।

लेखन अच्छे बनाने हैं अभी प्रैक्टिकल की जरूरत है। लेखन में फाइन और गूड लेखन की जरूरत है। लेखन में फाइन और गूड लेखन की जरूरत है। लेखन में फाइन और गूड लेखन की जरूरत है।

मन रखें।

Please, don't underestimate the power of seva.

क्योंकि सेवा ही जहाँ का हलका अपना है।



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



वह कोई बन्द होने का नहीं है, कितना माथा मारते हैं। यह काम कटारी दोनों को नहीं चलाना चाहिए।

कहाँ मनुष्यों की बात, कहाँ बाप की बात। जो काम विकार को जीतेंगे वही पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। अच्छा!

Simple Math..



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

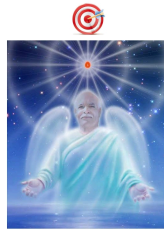


आपका शुक्रिया

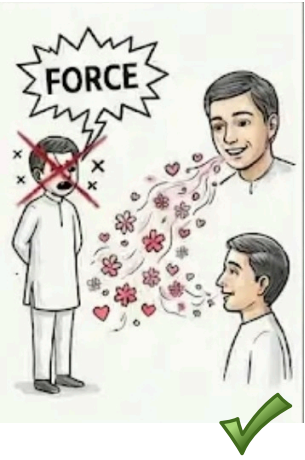
मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

धारणा के लिए मुख्य सार :-



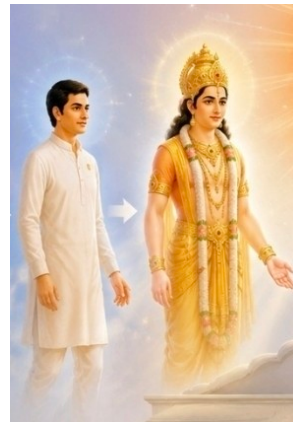
बाप समान



- 1) बाप समान प्यार का सागर बनना है। कभी भी आवेश में नहीं आना है। अपनी जबान बड़ी मीठी रखनी है। सबको राजी करना है।



- 2) हड्डी सर्विस करनी है। नशे में रहना है कि अब यह पुराना शरीर छोड़ जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे।



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- देही-अभिमानि स्थिति में स्थित हो सदा

विशेष पार्ट बजाने वाले सन्तुष्टमणि भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

Characteristics of

जो बच्चे विशेष पार्टधारी हैं उनकी हर एक्ट विशेष होती, कोई भी कर्म साधारण नहीं होता।

साधारण आत्मा कोई भी कर्म देह-अभिमानि होकर करेगी और

विशेष आत्मा देही-अभिमानि बनकर करेगी।

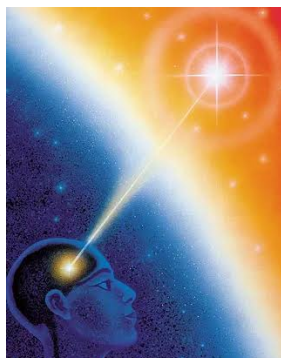
जो देही-अभिमानि स्थिति में स्थित रहकर कर्म करते हैं वे स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहते हैं और दूसरों को भी सन्तुष्ट करते हैं इसलिए उन्हें सन्तुष्टमणि का वरदान स्वतः प्राप्त हो जाता है।



स्लोगन:- प्रयोगी आत्मा बन योग के प्रयोग से सर्व खजानों को बढ़ाते चलो।



Points:



धारणा



20-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



एक समय की बात है। एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे। तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छू ने महात्मा को डंक मार दिया। महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने उन्हें बार-बार डंक मारा। अंततः महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया। थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे। जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी। तब महात्मा ने कहा- बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य मेरा कर्तव्य दया करना हूँ तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ। शिक्षा- मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हो, मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रखकर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा को अपनी पालना से उपकारी बना सकते हो। कैसी भी पतित आत्मा, पतित-पावन की वृत्ति से पावन हो सकती है।

जैसे माँ बच्चे की कमजोरियों वा कमियों को नहीं देखती है। उनको ठीक करने का ही रहता है।

तो यह पालना करने का कर्तव्य इस रूप में स्थित रहने से यथार्थ चल सकता है।

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.1 सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो:

(अ) मीठे बच्चे, सुबह का समय बहुत अच्छा है। सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो याद ठहरेगी, फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। तुम देखते हो कई बच्चे सवेरे उठ नहीं सकते। 10-15 वर्ष मेहनत करते आये हैं, तो भी समय पर उठ नहीं सकते। कम से कम 3-4 बजे तो उठो। भक्त लोग भी सवेरे उठ कर ध्यान करते हैं, जाप करते हैं हनुमान का, शिव का। तो सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को प्यार से याद करने की आदत पक्की डालनी है। रात को जल्दी सो जाओ। कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की। बहुत जमा करना है ना! तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो।

हो जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

(आ) कॉलेज के बच्चे भी सवेरे उठ कर अध्ययन करते हैं। सवेरे क्यों बैठते हैं? क्योंकि आत्मा विश्राम कर रिफ्रेश हो जाती है। सवेरे उठने का शौक होना चाहिए। क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर भी रात को बाहर बत्ती के नीचे जा कर पढ़ता था। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञानमार्ग में सवेरे उठ कर बाप को याद करना चाहिए। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धन्य बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 बजे का अच्छा होता है। सत्संग आदि भी सवेरे और शाम को करते हैं।

100

AmritVela.p65



2/18/2010, 11:58 AM

Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise.
Benjamin Franklin



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

(इ) मीठे बच्चे, याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय अन्तर्मुखी बन आत्म-स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

Attention...!

(ई) सवेरे-सवेरे उठ याद में ज़रूर बैठना चाहिए। इसमें गफलत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है। बच्चे, माया से भी डरो मत। भल कितना भी भुलाने की कोशिश करे, लेकिन थको नहीं। अमृतवेले उठ याद में रहने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर बहाने बहुत बनाते हैं। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं हैं, तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना — यह तो गँवाना है। इसलिए सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

